पंचम् अध्याय

वाराणसी जनपद की रूपरेखा

जनपद-वाराणसी

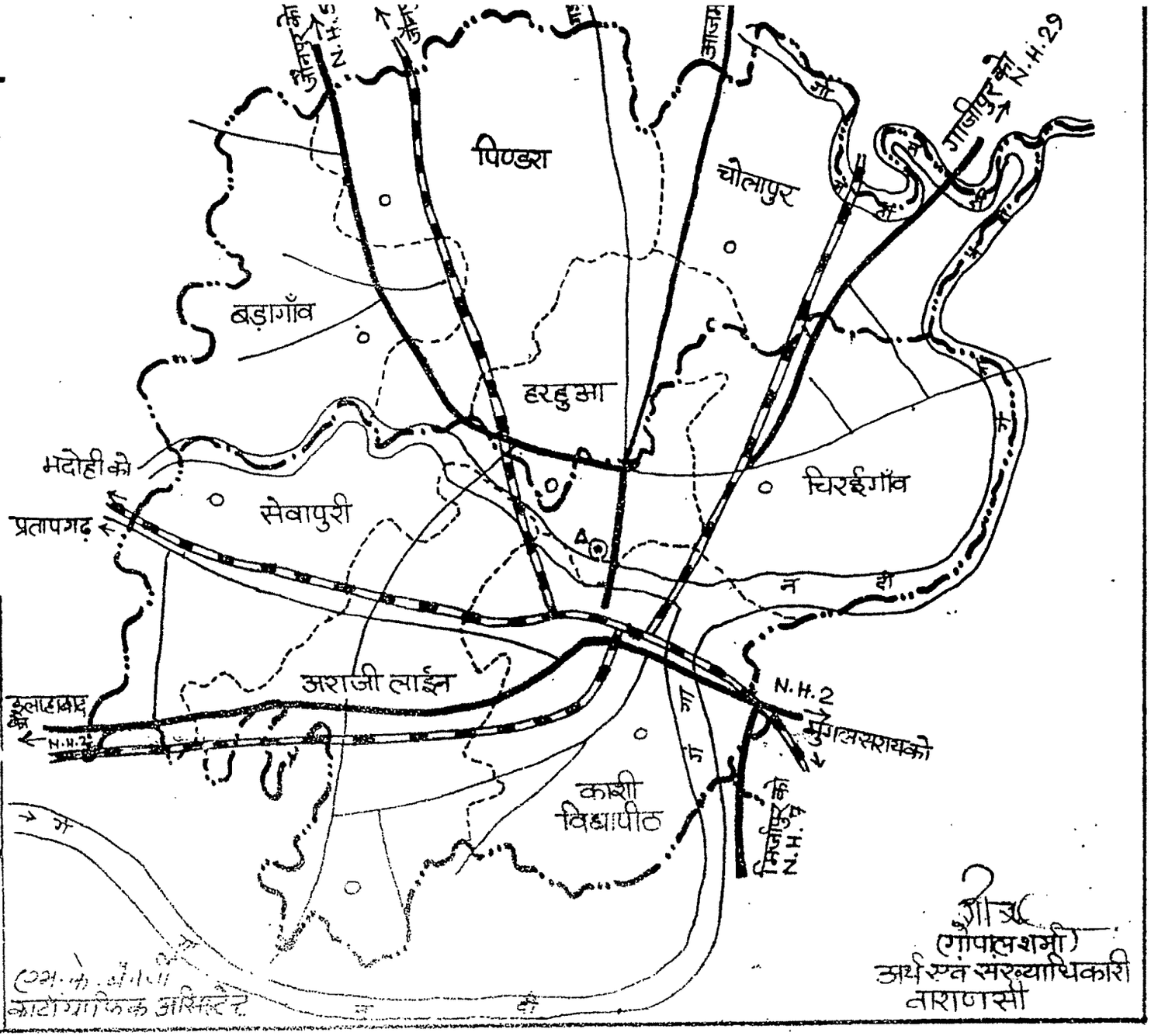

क्र.सं.	विवरण	संकेत
1-	जनपद सीमा	
2-	तहसील सीमा	
3-	विकास खण्ड सीमा	
4-	जनपद मुख्यालय	⊙
5-	तहसील मुख्यालय	△
6-	विकास खण्ड मुख्यालय	○
7-	रेलवे लाइन	
8.	राष्ट्रीय मार्ग	
9-	राजकीय मार्ग	
10.	अन्य राजकीय मार्ग	
11-	अन्य मार्ग	

(गोपाल शर्मा)
अर्थ एवं सख्याधिकारी
वाराणसी

वाराणसी जनपद की रूपरेखा

उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में वाराणसी स्थित है। वाराणसी पूरे भारत का दिल है। इसे बनारस या काशी के नाम से जाना जाता है। भारत में वाराणसी ही ऐसा केन्द्र है, जहाँ सबसे ज्यादा आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार हुआ और इस कारण यह नगरी आर्थिक दृष्टिकोण से भी प्रसिद्ध है। आर्यवैदिक काल से ही काशी प्रसिद्ध रही है। भारतीय संस्कृति का निर्माण ही गंगा के तट से हुआ और गंगा ने काशी को तीन ओर से घेर लिया है। किंवदन्तियों के अनुसार, काशी गंगा से भी पुरानी है। इसके गाँव भी इन्हीं संस्कारों से पोषित है। आध्यात्मिकता के साथ-साथ आर्थिक विकास पर भी काशी की गरिमा की छाप दिखायी पड़ती है।

स्थिति:

वाराणसी जनपद 24.56 से 25.35 उत्तरी अक्षांश एवं 81.14 से 83.24 पूर्वी देशान्तर के मध्य उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में स्थित है। गंगा नदी इस जनपद को दो समान भागों में विभाजित करती है। वरूणा नदी, वान गंगा, गोमती नदी, नाद नदी, हापी नदी, कर्मनाशा, गड़ई एवं चन्द्रप्रभा नदियाँ भी जनपद की भौगोलिक स्थिति में उत्तरदायी हैं। वाराणसी में चकिया तहसील का नौगढ़ क्षेत्र पठारी है। नौगढ़ क्षेत्र का अधिकांश भाग विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित है।

वाराणसी जनपद के पश्चिम में इलाहाबाद, उत्तर पश्चिम में जौनपुर, दक्षिण में मिर्जापुर, उत्तर पूर्व में गाजीपुर तथा पूर्व में बिहार प्रान्त अपनी सीमा को दर्शाते हैं। जनपद का भौगोलिक विस्तार 5091 वर्ग कि0मी0 है, जिसमें

मात्र 158 वर्ग कि0मी0 नगरीय है, शेष सभी ग्रामीण क्षेत्र है।[1] जनपद का कुल क्षेत्रफल 5 हजार 91 वर्ग किलोमीटर भूमि है।[2]

मिट्टी:

भूमि की प्राकृतिक बनावट के अनुसार यह भाग गंगा सिन्धु के जलोद समतल पूर्वी का अंश है। जनपद का दक्षिणी भाग विन्ध्य पर्वत के पठार, उत्तरी भाग अत्यन्त उपजाऊ भू-भाग में स्थित है। यह जनपद, समुद्र तल से 256 से 267 फीट की ऊँचाई पर अवस्थित है। वाराणसी जनपद की मिट्टी मुख्य रूप से नदियों एवं पहाड़ी क्षेत्रों से प्रभावित है। गंगा नदी के किनारे के क्षेत्र में बलुई एवं नदी से दूर के क्षेत्र में बलुई एवं दोमट मिट्टी पायी जाती है। वाराणसी के चन्दौली क्षेत्र में काले रंग की मिट्टी पायी जाती है। जहाँ-तहाँ ऊसर भी पाये जाते है। भूमि की बनावट के अनुसार जनपद को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- दक्षिण का पठार और गंगा का मैदानी भाग।

वाराणसी की चकिया तहसील पठारी है। इसका निर्माण विन्ध्य पर्वत श्रेणियों के घेराव तथा कर्मनाशा एवं चन्द्रप्रभा नदियों के कारण हुआ है। गंगा का मैदानी भाग वृहत्तर गंगा के मैदान का एक भाग है और यह भाग गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से बना है।[3] यह क्षेत्र अत्यन्त उपजाऊ एवं समतल है जो समुद्र तल से 256 से 267 फुट की ऊँचाई पर स्थित है।

---

1 सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, वाराणसी-विकास पुस्तिका, वाराणसी, 1991-92, पृ0 5.

2 जिला सूचना केन्द्र, वाराणसी, प्रतिदिन 1991-92, पृ0 1.

3 डी0एन0 वैद्य, जियोलॉजी ऑफ इण्डिया, एडीशन 53, पृ0 391.

जलवायुः

किसी देश में उपलब्ध पशुधन, वन सम्पदा, उद्योग-धन्धे तथा नागरिकों की कार्य क्षमता आदि सभी जलवायु द्वारा प्रभावित होते है।

वृहत-स्तर पर वाराणसी जनपद की जलवायु आन्तरिक महाद्वीपीय मानसूनी है। वाराणसी जनपद अर्द्धशुष्क पूर्वी क्षेत्र में स्थित है। जहाँ सामान्यतया 105 से 125 सेंटीमीटर औसत वर्ष में वर्षा होती है और वायु का वेग सामान्यतः 3.7 से 4.3 किलोमीटर प्रति घण्टा रहता है। यहाँ पर तीन प्रकार के मौसम पाये जाते है। मार्च-अप्रैल में गर्मी का मौसम शुरू होता है तथा मई-जून में अधिकतम गर्मी पड़ती है। इन दिनों में मैदानी तथा पठारी भागों से पश्चिम की ओर से गर्म हवायें यानि लू चलने लगती है। पूर्व की ओर बंगाल की खाड़ी की ओर से उठने वाली मानसूनी हवाओं से जून के अन्त में वर्षा का प्रारम्भ हो जाता है जो सितम्बर माह तक चलता रहता है। नवम्बर माह से शरद ऋतु का प्रारम्भ होता है। यह मौसम फरवरी तक बना रहता है।

प्राकृतिक वनस्पतिः

वाराणसी जनपद मानसूनी वनों के क्षेत्र में पड़ता है, जिनकी पत्तियाँ वसन्त ऋतु आने के पहले गिर जाती है। जनपद के तीन प्रमुख तहसीलों- वाराणसी, ज्ञानपुर और चन्दौली में वनों को काट कर कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित कर दिया गया है। अतः इन तीन तहसीलों में प्रायः प्राकृतिक वनों का अभाव-सा है। चकिया तहसील में, जो कि पठारी है, छोटे वृक्ष व झाड़ियाँ पायी जाती है। मुख्य वृक्षों में यहाँ पर आम, शीशम, महुआ, बबूल और नीम के पेड़ पाये जाते है जो कि प्रकृति प्रदत्त है और कुछ लगाये भी गये है।

सामाजिक वानिकी कार्यक्रम 1979 में चलाकर सरकार ने काफी पौधे लगवाये है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके उनसे प्राप्त उपज को ग्रामीणों को सुलभ कराना है तथा कृषकों को कृषि के साथ-साथ वृक्षारोपण करने हेतु उत्साहित करना भी है।

वर्ष 1981-1991 तक लगभग 5445 हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षारोपण किया जा चुका है।[1]

यातायात:

वाराणसी जनपद उत्तरी भारत के यातायात के केन्द्र पर स्थित है। यहाँ से भारत के विभिन्न नगरों को सड़क, रेलमार्ग, वायु मार्ग, यातायात की सुविधा उपलब्ध है तथा सातवीं पंचवर्षीय योजना में गंगा नदी में कलकत्ता से इलाहाबाद तक जल मार्ग द्वारा भी यातायात की सुविधा उपलब्ध की गई।

वाराणसी, दिल्ली से कलकत्ता जाने वाले भारत के प्रमुख राजमार्ग नं0 7 जी0टी0 रोड पर स्थित है, जो वाराणसी और इलाहाबाद के बीच में गोपीगंज के पास वाराणसी में प्रवेश करती है। सड़कों की लम्बाई 1980-81 में 1380.50 किलोमीटर थी वही 1994-95 में 2686 किलोमीटर हो गयी।[2]

वाराणसी से भारत के प्रत्येक नगर को रेल सेवा द्वारा जोड़ा जाता है। वाराणसी जनपद में कैण्ट व मुगलसराय स्टेशन भारत के बड़े स्टेशनों में से एक है। इसमें मुगलसराय एशिया में प्रसिद्ध जंक्शन है।

---

1 विकास पुस्तिका, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, वर्ष 1991-92.

2 सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1982 एवं 1996.

वाराणसी जनपद में बाबतपुर में हवाई अड्डा है, जो वाराणसी को देश के अन्य भागों से जोड़ता है।[1]

सामान्य-भू उपयोग:

भूमि उपयोग से वर्तमान कृषि विकास एवं भावी कृषि प्रसार की सम्भावनाओं का ज्ञान होता है। स्थान एवं समय सापेक्ष्य में भू-उपयोग की दशायें भिन्न-भिन्न हो सकती है तथा इनमें परिवर्तन हुआ करता है। सारणी में हम वाराणसी जनपद के भू-उपयोग की स्थिति को दर्शाते है-

---

1 योजना काल में प्रगति का सिंहावलोकन 1980-85, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, वाराणसी। पृ0 18.

सारणी-5.1: जनपद में विकास खण्डवार भूमि उपयोग (हेक्टेयर में)

(1980-81 तथा 1994-95)

क्रम संख्या	*उपयोग*	*क्षेत्रफल 1980-81*	*क्षेत्रफल 1994-95*
1.	वन	77404	77363
2.	कृषियोग्य बंजर भूमि	6650	4647
3.	वर्तमान परती	20955	9531
4.	अन्य परती	11217	14270
5.	कृषि के अयोग्य भूमि	13209	6247
6.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	49279	42713
7.	चारागाह	214	56
8.	उद्यानों का क्षेत्रफल	12124	4920
9.	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	324108	246110
10.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	515170	405857
11.	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	142479	129313
12.	सकल बोया गया क्षेत्र	466587	375423
13.	शुद्ध सिंचित क्षेत्र	204896	169728
14.	सकल सिंचित क्षेत्र	273931	285136

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1996.

सारणी से स्पष्ट है कि वनों का क्षेत्रफल 1994-95 में 77363 हेक्टेयर है। 1994-95 में सकल बोया गया क्षेत्र 375423 हेक्टेयर है जिसमें सकल सिंचित क्षेत्र 285136 हेक्टेयर है।

सारणी से स्पष्ट है कि 1994-95 में कुल परती भूमि 9531 हेक्टेयर है। उर्वरकों के समुचित उपयोग, अधिक उत्पादकता एवं उपादेय बीज नियमित सिंचाई साधनों की उपलब्धता एवं विकसित कृषि तकनीक के माध्यम से परती भूमि को कृषि योग्य एवं अधिक उपजाऊ बनाया जा सकता है।

जोत का आकार:

जोत आकार द्वारा भू-व्यवस्था, उपयोग की दशायें और सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप परिलक्षित होता है। छोटे आकार वाले जोतों में छोटे कृषि यन्त्रों एवं पशुओं का उपयोग होता आया है। संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन के परिणामस्वरूप छोटी जोतों का प्रादुर्भाव हुआ। चकबन्दी के द्वारा जोतों का आर्थिक आकार देने का प्रयास किया गया है।

वाराणसी जनपद में जोत के आकार की स्थिति को सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी-5.2: जोत आकार (1990-91)

जोत (हेक्टेयर)	*जोतों की संख्या (करोड़ में)*	*कुल जोतों का प्रतिशत*	*कुल परिचालित क्षेत्र (करोड़ हेक्टेयर)*	*कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत*
0-1	6.33	59.4	2.49	15.1
1-2	2.01	18.8	2.88	17.4
2-4	1.39	13.1	3.84	23.2
4-10	0.76	7.1	4.48	27.0
10 से अधिक	0.17	1.6	2.87	17.3
योग	10.66	100.0	16.55	1000.00

स्रोत- गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर, एग्रीकल्चर स्टेटीस्टीक एट ए ग्लेन्स, 1999 (दिल्ली, 1999), सारणी 11.1, पृ0 119।.

सारणी से स्पष्ट है कि 1 हेक्टेयर से कम जोतों की संख्या सम्पूर्ण जोतों की 59.4 प्रतिशत तथा उनका क्षेत्रफल 15.1 प्रतिशत है। 1 से 2 हेक्टेयर की जोतों की संख्या 18.8 प्रतिशत तथा क्षेत्रफल 17.4 प्रतिशत है। 2 से 4 हेक्टेयर की जोतों की संख्या 13.1 प्रतिशत और क्षेत्रफल 23.2 प्रतिशत है। 4 से 10 हेक्टेयर की जोतों की संख्या 7.1 प्रतिशत और क्षेत्रफल 27.0 प्रतिशत है। 10 से अधिक हेक्टेयर के जोतों की संख्या 1.6 प्रतिशत तथा क्षेत्रफल 17.3 प्रतिशत है।

जोत आकार की इस प्रवृत्ति से स्पष्ट होता है कि वाराणसी जनपद में छोटी जोतों की संख्या अधिक है तथा बड़ी जोतों वाले कृषकों की संख्या कम है। छोटी जोतों की प्रधानता इस बात का प्रमाण है कि कृषकों के पास कम भूमि है। अतः ग्रामीण क्षेत्र में कृषि सम्बन्धित व्यवसाय, जैसे मुर्गीपालन, पशुपालन, सूअर पालन, मत्स्यपालन तथा अन्य कुटीर उद्योगों को विकसित करके ही इन कृषकों की आर्थिक दशा में सुधार किया जा सकता है।

सिंचाई क्षमता:

कृषि विकास में सिंचाई का महत्वपूर्ण स्थान है। क्षेत्र के उन्नत कृषि उत्पादन के लिए विकसित कृषि तकनीक, उपयुक्त उर्वरक प्रयोग, सस्ता श्रम व विपणन की समुचित व्यवस्था के साथ ही सिंचाई की उत्तम व्यवस्था अति आवश्यक है। वाराणसी जनपद में सिंचाई के साधन एवं स्रोत को सारणी से दर्शाया गया है-

सारणी-5.3: सिंचाई के साधन एवं स्रोत की संख्या

सिंचाई के साधन	स्रोतों की स्थिति	
	1980-81	1994-95
नहरों की लम्बाई किलोमीटर	533.2	672
नलकूप राजकीय संख्या	1199	953
नलकूप निजी संख्या	-	15169
पक्के कुएँ की संख्या	24044	2075
रहट संख्या	454	590
पम्पिंग सेट संख्या	4030	21758

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1982 तथा 1996.

सारणी से स्पष्ट है कि जनपद में नहर नलकूप तथा पम्पिंग सेट से सर्वाधिक सिंचाई की जाती है।

आधार वर्ष के तुलना में वर्तमान वर्ष 1994-95 में नहरों की लम्बाई भी बढ़ी है तथा सिंचाई के अन्य साधन की संख्या भी बढ़ी है लेकिन पक्के कुँएँ की संख्या कम हुई है। इससे परिलक्षित होता है कि कुएँ का महत्व सिंचाई में कम हुआ है।

सारणी-5.4: सिंचाई के साधनों द्वारा सिंचित क्षेत्रफल

सिंचाई के साधन	सिंचित क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	
	1980-81	1994-95
नहरों	89305	142689
नलकूप (राजकीय एवं निजी)	103370	25374
पक्के कुएँ	8918	857
तालाब	27	503
अन्य	781	2800

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1982 एवं 1996.

सारणी से स्पष्ट है कि कुल सिंचित क्षेत्रफल में सर्वाधिक योगदान नहरों का रहा है। इसके अतिरिक्त नलकूपों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, परन्तु नलकूप में राजकीय नलकूपों की सिंचन क्षमता कम होती जा रही है जिसका मुख्य कारण है कि राजकीय नलकूप प्रायः खराब ही पाये जाते है जिससे कृषि एवं कृषिगत काम-धन्धों पर काफी प्रभाव पड़ता है।

कृषि उर्वरकों का वितरण:

जनपद में फसलों के लिए उर्वरकों का भी वितरण किया गया। उर्वरकों के वितरण को सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

सारणी-5.5: उर्वरक वितरण (मैट्रिक टन)

उर्वरक	वर्ष 1980-81	वर्ष 1994-95
नाइट्रोजन	23150	44225
फास्फोरस	4949	8112
पोटास	3536	3920

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी 1982 तथा 1996.

सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1980-81 की तुलना में वर्ष 1994-95 में उर्वरक वितरण बढ़ा है।

कृषि विकास सुविधायें:

कृषि के विकास के लिए कृषि विकास सुविधाओं का विस्तार अपेक्षित है। अधिक उत्पादन के लिये उन्नत बीज एवं उर्वरकों का समुचित प्रयोग महत्वपूर्ण है। फसलों की सुरक्षा के लिए कृषि रक्षक रसायनों का उपयोग आवश्यक है। हम नीचे सारणी में कृषि से सम्बन्धित कुछ मुख्य सुविधाओं की संख्या को स्पष्ट कर रहे है-

सारणी-5.6: कृषि सम्बन्धित मुख्य सुविधायें

सुविधायें	संख्या	
	1980-81	1994-95
बीज गोदाम उर्वरक डिपो	128	180
ग्रामीण गोदाम	-	56
कीटनाशक डिपो	23	18
बीज वृद्धि के फार्म	-	3
शीत भंडार	25	18
कृषि सेवा केन्द्र	-	7
कृषि उत्पादन मण्डी समिति	-	3
बायो गैस संयन्त्र	994	5356

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1982 तथा 1996.

सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1980-81 की अपेक्षा वर्ष 1994-95 में कृषि सम्बन्धित सुविधाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। इनकी और विस्तार की जरूरत है क्योंकि नवीन कृषि तकनीकों के अभाव में कृषि विकास संभव नहीं है।

जनपद के उद्योग:

जनपद वाराणसी प्राचीन काल से ही शिक्षा, संस्कृति, धर्म और अध्यात्म के साथ उद्योग धन्धों और कला का भी केन्द्र रहा है। जनपद में फैले कुटीर

उद्योगों का जाल अधिकांश लोगों को रोजी-रोटी प्रदान करता है। साथ ही साथ वाराणसी जनपद, उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला जिला है। यहाँ के कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित कालीन, दरियाँ, बनारसी साड़ी एवं रेशमी वस्त्र विश्व विख्यात हैं, जिसका विदेशों में निर्यात होने से काफी विदेशी मुद्रा अर्जन के साथ-साथ भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था मे भी महत्व है। कुटीर उद्योगों में आटा चक्की, साबुन उद्योग, तेल घानी इत्यादि उद्योग भी बढ़ता जा रहा है। जनपद में लघु उद्योग भी बढ़ता जा रहा है। जनपद में लघु उद्योगों में इलेक्ट्रानिक, पंखे, सिलाई मशीनें, सायकिले एवं अन्य इन्जीनियरिंग के उद्योग काफी मात्रा में कार्य कर रहे हैं।

इन उद्योगों के अतिरिक्त जनपद में कई बड़े उद्योग है, जिनमें डीजल इंजन रेल कारखाना, भारत हैवी इलेक्ट्रीकल लिमिटेड, रेलवे स्कीयर फैक्ट्री, सूती कपड़ा मिले, साहूपुरी उर्वरक कारखाना तथा सहकारी क्षेत्र में स्थापित चीनी मिल है।[1]

जनपद की जनसंख्या प्रवृत्तियाँ:

किसी भी देश की आर्थिक प्रगति वहाँ के मानवीय साधनों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहती है। इनमें मानवीय संसाधन को निस्सन्देह प्रथम पर रखा जा सकता है, क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं सदुपयोग वहाँ की जनसंख्या के ऊपर निर्भर है। मानवीय साधन का विकास ज्ञान कुशलता तथा समाज के व्यक्तियों की कार्य क्षमता में वृद्धि होने वाली एक प्रक्रिया है। आर्थिक अर्थो में यह कहा जा सकता है कि यह मानवीय

---

1 वार्षिक सर्वेक्षण संगठन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 1982-83, पृ0 13-14.

पूँजी ऐसा संचय है, जिसको अर्थव्यवस्था के विकास में प्रभावशाली विनियोग के रूप में लगाया जा सकता है।[1]

मानवीय श्रम के माध्यम से ही आर्थिक विकास की गतिशीलता एवं उसकी क्रियाओं तथा प्रक्रियाओं द्वारा ही अर्थव्यवस्था में उत्पादन सम्भव होता है। आर्थिक विकास कोई यान्त्रिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह मानवीय उपक्रम है।

जनसंख्या वितरण:

जनसंख्या:

वाराणसी जनपद की कुल जनसंख्या 1991 में 2772386 रही जिसमें शहरी जनसंख्या 1322248 और ग्रामीण जनसंख्या 1450138 रही जबकि आधार वर्ष 1981 में कुल जनसंख्या 3701006 थी जिसमें शहरी जनसंख्या 994823 और ग्रामीण जनसंख्या 2706183 थी। इसे हम सारणी से स्पष्ट करते है-

सारणी-5.7: जनपद की जनसंख्या का विवरण 1981 और 1991 के आधार पर

वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या	कुल जनसंख्या
1981	2706183	994823	3701006
1991	1450138	1322248	2772386

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी 1991.

सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1981 के तुलना में वर्ष 1991 में ग्रामों की आबादी घटी है। इसका मुख्य कारण है शहरों में रोजगार की तलाश तथा शहरों के प्रति लोगों का बढ़ता आकर्षण।

---

1 हरविशन एवं मायर्स, एजूकेशन मैन पॉवर एण्ड इकोनामिक ग्रोथ, 1964, पृ0 13.

सारणी-5.8: वाराणसी में जनगणना के अनुसार वृद्धि दर तथा प्रति दशक प्रतिशत अन्तर (1901-1911)

क्रंम सं0	समयान्तराल	कुल जनसंख्या (लाख)	प्रति दशक प्रतिशत अन्तर
1.	1901	1228891	-
2.	1911	1295567	0.6
3.	1921	1313977	1.6
4.	1931	1408845	7.1
5.	1941	1671388	18.6
6.	1951	1980090	18.5
7.	1961	2364874	19.4
8.	1971	2852459	20.6
9.	1981	3701006	29.7
10.	1991	2508110	2.2

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1999.

सारणी से परिलक्षित होता है कि 1981 तक जनसंख्या वृद्धि दर तेजी से बढ़ी है लेकिन फिर 1991 में घटी है।

जनसंख्या वृद्धि से होने वाले दुष्परिणाम को देखते हुए लोगों को और जागरूक होने की जरूरत है।

शैक्षिक संरचना एवं साक्षरता:

शिक्षा समाज को एक दिशा प्रदान करती है यह जन जागृति का एक मात्र साधन है। शिक्षा के अभाव में विभिन्न क्षेत्रों में प्राविधिक परिवर्तन एवं नवीन संसाधनों के प्रभावकारी प्रयोग आदि गतिविहीन हो जाते है। क्षेत्र विशेष में शैक्षिक संस्थाओं की उपलब्धता पर वहाँ की साक्षरता निर्भर करती है। आगे के सारणी में पहले हम जनपद में शिक्षितों की संख्या देखेगें फिर जनपद में शैक्षिक संस्थाओं की स्थिति देखेगें:

सारणी-5.9: जनपद में शिक्षितों की संख्या

वर्ष	पुरूष	स्त्री	कुल संख्या	कुल प्रतिशत
1981	893103	285639	1178742	31.8
1991	708677	325504	1034181	52.4

स्रोत: सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी 1996 तथा 1999.

सारणी से स्पष्ट होता है कि 1981 में कुल जनसंख्या का 31.8 प्रतिशत भाग ही शिक्षित था जिसमें पुरूषों की संख्या 47.0 प्रतिशत तथा स्त्रीयों की संख्या 16.2 प्रतिशत थी, जबकि 1991 में ये बढ़कर 52.4 प्रतिशत हो गया जिसमें पुरूषों की संख्या 67.3 प्रतिशत तथा स्त्रीयों की संख्या 35.3 प्रतिशत रहा। 1991 में उत्तर प्रदेश में साक्षर व्यक्तियों की संख्या 41.71 प्रतिशत थी। इस प्रकार उत्तर प्रदेश की तुलना में वाराणसी जनपद में साक्षर व्यक्तियों की संख्या कुछ अधिक है।

सारणी-5.10: जनपद में मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थायें

संस्थाओं की श्रेणी	संस्थाओं की संख्या	
	1980-81	1994-95
जूनियर बेसिक स्कूल	1681	1541
सीनियर बेसिक स्कूल	413	542
हायर सेकेन्डरी स्कूल	166	152
महाविद्यालय	18	18
विश्वविद्यालय	4	3

स्रोत: सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1982 तथा 1996.

वित्त सुविधायें (बैंकिंग):

कृषि एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के सफल संचालन में वित्त सुविधाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके लिए ऋण सुविधा उपलब्ध कराने में बैंकिंग संस्थायें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण क्षेत्र में बैंकों का प्रमुख उद्देश्य कृषि के लिये अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋण की पूर्ति करना, लघु एवं कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प एवं ग्रामीण क्षेत्र के अन्य आर्थिक कार्यो के लिये ऋण देना और कृषि, ग्रामीण उद्योगों एवं कारीगरों के विकास की विकासशील योजनाओं में मार्गदर्शन करना होता है।

वाराणसी जनपद में इस दृष्टिकोण से पर्याप्त विकास हुआ है। यहाँ बैंकों का निरन्तर विकास हुआ है जिसे हम सारणी से स्पष्ट करते है:

सारणी-5.11: जनपद में बैंकों की संख्या

बैंक	बैंकों की संख्या	
	1980-81	1994-95
राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाएं	97	151
अन्य गैर राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाएँ	-	24
काशी ग्रामीण बैंक	4	79
भूमि विकास बैंक	4	4
कोपरेटिव बैंक की शाखा	22	32
जिला कोपरेटिव बैंक	-	29

स्रोत- सांख्यिकी पत्रिका, वाराणसी, 1982 तथा 1996.

सारणी से स्पष्ट है कि वाराणसी जनपद में निरन्तर बैंकों का विकास हुआ है। यहाँ व्यावसायिक बैंकों की संख्या में निरन्तर विकास हुआ है, किन्तु इन व्यावसायिक बैंकों की कार्य-प्रणाली ग्रामीण क्षेत्रों के लिये उपयुक्त नही रही। इसलिए बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् भी वाराणसी जनपद का ग्रामीण क्षेत्र व्यावसायिक बैंकों की सुविधाओं से अछूता रहा। अत: ग्रामीण विकास एवं कृषि साख को सुव्यवस्थित करने के लिए यहाँ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के अन्तर्गत काशी ग्रामीण बैंक की स्थापना 1980 में की गयी। काशी ग्रामीण बैंक के स्थापना से वाराणसी जनपद के सभी विकास खण्डों का समुचित विकास हुआ है। 1980 में काशी ग्रामीण बैंक की मात्र चार शाखाएँ थी वही 1994-95 में इसकी संख्या बढ़कर 79 हो गयी। शाखा विस्तार का यह क्रम बैंक रहित क्षेत्रों में सम्पन्न किया गया है। इससे जनपद के ग्रामीण जनता में विकास की

नयी आशा का संचार हुआ है। सम्पूर्ण ग्रामीण विकास का लक्ष्य को प्रतिपादित करने, ग्रामीण कृषकों को उपयुक्त ऋण देने के लिए, लघु उद्यमियों, कृषियेतर कार्यो के लिए वित्त की व्यवस्था एवं भूमिहीन, श्रमिकों, निर्बल वर्गो आदि के उत्थान के लिए काशी ग्रामीण बैंक जनपद के सभी तहसीलों एवं विकास खण्डों में कार्यरत है। काशी ग्रामीण बैंक का विस्तृत विश्लेषण हम अगले अध्याय में करेंगें।

*****